अंबिकापुर-छ.ग.। जनजातीय गौरव दिवस के समापन समारोह में महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू से मुलाकात कर ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. विद्या बहन। साथ है ब्र.कु. पुष्पा, ब्र.कु. पार्वती एवं ब्र.कु. खिलानंद।

अस्का-ओडिशा। राष्ट्रीय किसान दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में ईश्वरीय सौगात भेंट करने के पश्चात् समूह चित्र में विधायक सरोज कांत पाढ़ी, चीनी शिल्प निगम परिचालना निर्देशक सुशांत पंडा, समाजसेवी संगीत पाढ़ी, ब्र.कु. प्रभाती, ब्र.कु. सुज्ञानी एवं ब्र.कु. सत्यप्रिय।

भरतपुर-कृष्णा नगर(राज.)। विश्व शांति भवन सेवाकेन्द्र पर त्रिभुवन शर्मा,वाइस चांसलर,महाराजा ब्रज विश्वविद्यालय आगमन पर आध्यात्मिक चर्चा के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. कविता दीदी व ब्र.कु. प्रवीणा। साथ हैं ब्र.कु. वर्षा।

गुरुग्राम-ओआरसी(हरियाणा)। अंतर्राष्ट्रीय एचकेएल सम्मेलन में मंचासीन हैं वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. हुसैन तथा अन्य अतिथिगण।

हाथरस-आनंदपुरी कॉलोनी(उ.प्र.)। मेरा भारत नशा मुक्त भारत अभियान के अन्तर्गत संदेश वाहन को शिव ध्वज दिखाकर रवाना करने के पश्चात् जिलाधिकारी अतुल वत्स एवं पुलिस अधीक्षक चिरंजीव सिन्हा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. शान्ता।

पतरातू-झारखंड। सेवाकेन्द्र आगमन पर डॉ. पीयूष रंजन को सम्मानित करने के पश्चात् चित्र में साथ है ब्र.कु. रामदेव, ब्र.कु. रोशनी तथा अन्य।

संगमयुग वह शुभ समय है जब परमपिता परमात्मा स्वयं आकर हमें श्रेष्ठतम आत्माओं की तरह तैयार करते हैं। बाबा मुरली में हमें उन विशेष बातों की याद दिलाते हैं, जिन्हें जीवन में धारण करने से हम उनके दिलतख्तनशीन बनते हैं और वही योग्यता आगे चलकर हमें सतयुग राज्यपद के अधिकारी बनाती है। इस युग में आत्मा को जो भी दिव्य शिक्षा मिलती है, वही उसके भविष्य के भाग्य का आधार बनती है। इसके लिए विशेष रूप से पाँच बातों पर ध्यान देना और उसे समझना ज़रूरी है_

दिलतख्तनशीन भविष्य के राज्यतख्त अधिकारी

संपूर्ण पवित्रता— पवित्रता केवल बाह्य अनुशासन नहीं; यह है संकल्पों की शुद्धता, भावनाओं की निर्मलता, दृष्टि की स्वच्छता और स्मृति की ऊँचाई। जब आत्मा देही-अभिमानी अवस्था में रहती है, तब वह सच्ची पवित्रता का अनुभव करती है। यह पवित्रता ही सतयुग के देवता-जीवन की मुख्य पहचान बनती है।

परमात्मा की संतान होने की स्मृति— बाबा बार-बार समझाते हैं कि "स्मृति से स्थिति बनती है और स्थिति से भविष्य बनता है।" यदि हम निरंतर यह अनुभव करते हैं कि हम परमात्मा के दिल-तख्त पर विराजमान श्रेष्ठ रचना हैं, तो यह स्मृति आत्मा की शक्ति, आत्म-सम्मान और राज्य करने की योग्यता को बढ़ाती है। आत्म-सम्मान में रहने वाली आत्मा ही भविष्य में सर्व सम्मान की अधिकारी बनती है।

वातावरण से अलिप्त रहना— कलियुग का वातावरण भारी है, परंतु उसके प्रभाव में आना हमारी योग्यता को कम करता है। इसलिए बाबा कहते हैं कि बच्चे वातावरण में रहें, लेकिन अलिप्त और निर्विकारी रहें। जो आत्मा आज न्यारेपन की शक्ति अर्जित करती है, वही कल सम्पूर्ण विश्व के वातावरण को दिव्य बनाने की सामर्थ्य रखती है।

इन सभी बिंदुओं का सार यही है कि आज जो आत्मा परमात्मा के दिल में रहने की कला सीख लेती है, वही कल सतयुग में तख्त-नशीन बनकर शासन करती है। संगमयुग पर दिल-तख्त नशीनता ही भविष्य की राजगद्दी की प्रथम योग्यता है। जो आज स्मृति, पवित्रता, संयम, सिविलाइज़्ड दृष्टि और अलिप्तता धारण करते हैं, वही सतयुग के स्वर्णिम राज्य के प्राकृतिक उत्तराधिकारी बनते हैं।

दृष्टि की पवित्रता— बाबा कहते हैं कि "आँखें धोखा देती हैं", इसलिए दृष्टि को सिविलाइज़्ड बनाना परम आवश्यक है। देह, रूप, स्वभाव या व्यवहार को देखकर प्रतिक्रिया देना आत्मा को नीचे गिराता है। इसलिए बाबा बच्चों को सिखाते हैं कि हर आत्मा को उसकी मूल स्थिति में देखें– वह भी एक ज्योति-बिंदु, वह भी परमात्मा की संतान है। जब दृष्टि बदलती है, तो संकल्प बदलते हैं और मन की कोमलता व देवत्व जागृत होता है।

सम्मान-स्थिति में स्थिर रहना— सच्ची योग्यता वही है जो निंदा और स्तुति में, मान और अपमान में, लाभ और हानि में, समान भाव रख सके। जो आत्मा परिस्थितियों के अनुसार हिलती-डुलती रहती है, वह दिल-तख्त की अधिकारी नहीं बन सकती। लेकिन जो आत्मा स्थिति में स्थिर, शान्त और संयमवान रहती है, वह बाबा का दिल जीत लेती है। यह आंतरिक स्थिरता ही भविष्य के राजयोग की नींव है।

कादमा-झोझूकलां(हरियाणा)। हरियाणा योग-आयोग, जिला प्रशासन, आयुष विभाग जिला चरखी दादरी व ब्रह्माकुमारीज के संयुक्त तत्वावधान में द्वितीय अंतर्राष्ट्रीय ध्यान दिवस पर जिला स्तरीय कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. वसुधा, जिला ध्यान योग समन्वयक अधिकारी डॉ. प्रमिल फोगाट, डॉ. सुनील जांगड़ा, योग शिक्षक बिशन सिंह आर्य, बी.के. मा. सुनील कुमार, जिला योगासन स्पोर्ट्स एसोसिएशन के सचिव सुरेंद्र आर्य चंदेनी, डॉ. रविंद्र कादयान, डॉ. रिंचा, डॉ. सत्या, डॉ. कविता तथा अन्य।

वीरगंज-नेपाल। विश्व ध्यान दिवस के अवसर पर 'विश्व शान्ति एवं सद्भाव के लिए ध्यान' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए क्षेत्रीय संचालिका ब्र.कु. रविना दीदी। मौके पर विजय कुमार सरावगी,वीरगंज महानगर के पूर्व प्रमुख, कविराज धीरेन्द्र सिंह,योगा प्रशिक्षक, प्रकाश थारू,सामाजिक अभियन्ता, पत्रकार जगत राई लगायत, डॉ. संयुक्ता साह, ब्र.कु. बेली, ब्र.कु. छोटेलाल, ब्र.कु. गोपिनी आदि की उपस्थिति रही।

झारमारी-पंजाब। ओमैक्स ग्रीन्स सेवाकेन्द्र पर आयोजित 'शाबाश ज़िंदगी-सेलिब्रेटिंग लाइफ' कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में गायक ओम प्रकाश,पठानकोट, ब्र.कु. मीरा, ब्र.कु. दिव्या तथा अन्य।

नोएडा-उ.प्र.। विश्व ध्यान दिवस पर गार्डेनिया ग्लोरी क्लब हॉल में 'आंतरिक शांति से वैश्विक समृद्धि का आह्वान' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. लीना दीदी। मौके पर उपस्थित रहे ब्र.कु. पायल,न्यू यॉर्क व विख्यात टैक्स विशेषज्ञ अरुण कुंद्रा।

राजसमंद-राज.। सेवाकेन्द्र पर आयोजित स्नेह मिलन कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में सीए श्यामलाल शर्मा, सॉफ्टवेयर इंजीनियर सुरेश जी, ब्र.कु. पूनम तथा अन्य।

रुड़की-उत्तराखंड। नशा मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत शिवालिक पब्लिक स्कूल में नशा मुक्ति के लिए प्रतिज्ञा दिलाते हुए ब्र.कु. गीता। साथ हैं स्कूल की प्रधानाचार्या श्रीमती उर्मिला पुंडीर तथा अन्य।